संगीत से प्रभावित युवा पीढ़ी

डॉ० अलका शर्मा
विभागाध्यक्षा
आर०जी० पी०जी० कॉलिज, मेरठ

प्रियंका रस्तौगी
शोध कर्त्री
संगीत विभाग
आर०जी० पी०जी० कॉलेज, मेरठ

बच्चे राष्ट्र के भावी निर्माता है। किसी भी राष्ट्र और समाज की नींव हमारी आज की पीढ़ी या ये बालक ही है, और बच्चों के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक क्षमताओं का स्वस्थ रूप से विकास तभी संभव है जब उनका पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा सही रूप से हो, क्योंकि हमारी युवा पीढ़ी की दिनोदिन उन्नति के साथ ही भविष्य में राष्ट्र की उन्नति निर्भर करती है।

समस्त प्राणियों के जन्म से ही कुछ विशेष प्रकार की मूल प्रवृत्तियाँ पाई जाती है। मनुष्य जिनके आधीन होकर ही वह अपने समस्त कार्यों को पूरा करता है और शिक्षा इसमें अहम भूमिका निभाती है। शिक्षा मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति का एक ऐसा आधार है जो उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करती है।

अतः बच्चे ही हमारे राष्ट्र के निर्माता है और बच्चों के सर्वांग्रीण विकास में संगीत कला एक सशक्त माध्यम है।

संगीत एक सम्मोहन विद्या है जिसमें मंत्रमुग्ध हो मनुष्य आत्मलीन हो जाता है, तो फिर एक अबोध बालक इन स्वरों के सहज नाद से कैसे बच सकता है। अधिकतर ऐसा देखा भी गया है कि एक अबोध शिशु को माँ जब लोरी गाकर सुलाती है, तब यह उन स्वरों को समझता तो नहीं है पर इन स्वरों से होने वाले मधुर आन्नद में मग्न होकर वह सो जाता हैं। धीरे–धीरे बच्चा जब बढ़ता है तो माँ सांगीतिक क्रियाओं के द्वारा ही उसके साथ सामन्जस्य बनाती है। संगीत प्रेम का पहला सोपान है। हिन्दी साहित्य के महान लेखक मुंशी प्रेमचन्द जी ने संगीत के प्रभाव को कितने सरल व सुन्दर शब्दों में कहा है 'मनोव्यथा जब अधिक असहाय और अपार हो जाती है और जब उसे कही चैन नहीं मिलता जब वह रूदन व क्रन्दन की गोद में भी आश्रय नहीं पाती है तब वह मानव संगीत के चरणों में ही जा गिरती है।'

आज का समय भाग–दौड़ भरे जीवन से भरा है। प्रतिस्पर्धा के इस युग में बच्चों पर औपचारिक शिक्षा का बोझ बहुत ज्यादा है। छोटे–छोटे बच्चे आज खुद से ज्यादा वजन का बैग अपने कंधों पर ढोते है और स्कूल में अनेक विषयों की किताबों को लगातार पढ़ते–पढ़ते अध्यापिका का निर्देश सुनकर व लिखते–लिखते वह नीरसता का आभास करते है। ऐसे में विद्यालय में यदि बाल संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए तो वह बच्चों के लिये उपयोगी सिद्ध होगा जिससे उनकी मानसिक व शारीरिक थकान दूर होगी। वैसे भी आजकल के बच्चे इतने तेज और मानसिक व शारीरिक रूप से इतने दक्ष होते है कि उन्हें थोड़ा निर्देशन मिलने पर भी वह बहुत कुछ कर जाते हैं।

आज केबिल टी०वी० पर प्रसारित अनेक सांगीतिक कार्यक्रम इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। जी०टी०वी० पर प्रसारित 'लिटिल चैम्पस' जिसमें छोटे–छोटे बच्चों की गायकी ने बड़े–बड़े उस्तादों को अचम्भित कर दिया। इसके अतिरिक्त 'डॉस इंडिया डॉस' के माध्यम से बच्चों ने संगीत और डांस में अपनी प्रवीणता दिखाई। आजकल प्रसारित कार्यक्रम 'इंडिया गोट टेलेन्ट' में मात्र तीन साल के बच्चे ने ड्रम बजाया जिसमें उसने बीट्स बदल–बदल कर प्रस्तुति दी।

उसकी इस प्रतिभा को देखकर जज भी अचंम्भित थे। अतः यह उस बच्चे को ईश्वर का दिया ज्ञान है। उसने संगीत सीखा नहीं, वह तो ठीक से बोलना भी नहीं जानता है पर संगीत के स्वरों से उसका नाता जन्म से ही है।

संगीत शिक्षण से बच्चों में साधना शक्ति व संयम पल्लवित होता है। बच्चों के अपरिपक्व मस्तिष्क एवं कोमल हृदय में संगीत के द्वारा किसी भी कठिन से कठिन विषय को सरलता से अंकित किया जा सकता है। यह एक ऐसी कला है जो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करती है और विशेष रूप से संगीत के स्वरों का जादू अव्यस्कों को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भूत क्षमता रखता है। संगीत के द्वारा व्यायाम बच्चों के विकास में सहायक है। आजकल 'एरोबिक्स' डांस ऐसा होता है जिसे संगीत के द्वारा किया जाता है।

संगीत मस्तिष्क के साथ–साथ सारे शरीर के लिये उपयोगी है जैसे गायन के द्वारा कण्ठ, फेफड़े तथा शिराओं को, वादन के द्वारा अंगुलियों व बाहों का व नृत्य के द्वारा सारे शरीर को ऊर्जा मिलती हैं। बच्चों में कुछ न कुछ करने की प्रवृत्ति रहती है। अधिकतर देखा गया है कि बच्चे थोड़े समय के लिये भी आराम से नहीं बैठते हैं। उनके मन में कुछ न कुछ चलता रहता है। उनके इस गुण को यदि सही दिशा दी जाये तो वह अनेक प्रकार के सृजनात्मक कार्य सीख लेते हैं। आधुनिक गानों द्वारा बच्चे बहुत ही आन्नदित होते हैं या

किसी वाद्य पर (हारमोनियम या कैसियो) एक छोटी स्वर रचना के साथ खेलना, बच्चों का हमेशा ही मेढ़क ही तरह उछलना, कूदकर, पक्षियों की तरह अभिनय करना उनके लिये बड़ा ही रूचिकर होता है। बच्चे नृत्य व अभिनय को आन्नदपूर्वक करते है। कभी– कभी सुन्दर स्वर रचना सुनते ही बालक उत्साहित होकर स्फूर्ति लेकर स्वतः अभिनय करते, नाचते व कूदते है और यही क्रियायें बच्चों में संगीत के प्रति रूचि पैदा करती है। संगीत सामान्य बालकों में ही नहीं अपितु असामान्य बालकों के मानसिक व शारीरिक विकास में सहायक है। संगीत के द्वारा किये गये अनेक अनुसंधानों में इस तथ्य को सत्य एवं उत्कृष्ट प्रमाणित किया जा चुका है। विकलांग बच्चे जो कि किसी न किसी रूप में असमर्थ होते है उनके द्वारा की गई क्रियाओं में संगीत बहुत ही सहायक होता है। शारीरिक व मानसिक अभावों के कारण बच्चे स्वयं को समाज से अलग समझते है और उनमें हीन भावना जन्म ले जाती है। ऐसी स्थिति में संगीत उनमें आत्म–विश्वास एवं विकासमयी आशा की किरण प्रस्फुटित कर सकता है। जैसे जिन बच्चों की आंखों की रोशनी नहीं है, वह वाणी द्वारा ही सीख पाते है। यदि उन्हें गायन या वादन की शिक्षा दी जाये तो वह सहज ही सीख पाते है और उनमें आत्म सन्तुष्टि व आत्म विश्वास बढ़ता है तथा वह मानसिक कुठाओं से मुक्त होते हैं जो कि स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है मूक–बधिर बच्चों पर डॉ0 शंकर लाल मिश्रा द्वारा किए गए प्रयोग की 'परिणामस्वरूप मूक–बधिर बालकों के लिये गायन एवं वादन सीखना तो निरर्थक ही है, लेकिन उन्हें डांस सिखाया जा सकता है। अध्यापक के द्वारा हाथ से ताल देने पर व वादक के चलन की सहायता से मूक–बधिर बच्चे लय का ज्ञान कर लेते है।

अतः बच्चे तो कच्ची मिट्टी की भांति होते है जिन्हें हम जिस दिशा में ढालेंगें वो उसी दिशा में जायेंगें। गायन एवं वादन में स्वर, लय, व ताल बद्धता से ही गीत की धुनों की आवृत्तियों में नियमबद्धता, नृत्य के विभिन्न चरणों की क्रमबद्धता आदि के अनुशासनात्मक गुण बच्चों में संगीत की शिक्षा के द्वारा अद्भूत परिणाम देखे गये हैं। बच्चों का मन कोमल होता है और संगीत के स्वर उनके मन को अनयास ही छू लेते हैं।

तो क्यों ना हम आज के राष्ट्र निर्माणक–युवा पीढ़ी व बढ़ती उम्र के बच्चों को संगीत द्वारा अग्रसर कर मार्गदर्शन करने में सहयोग दें।